Hindi & English explanations of Holi & Holika

🔥ओ३म्🔥

होली का वास्तविक स्वरुप

The true facet of Holi

इस पर्व का प्राचीनतम नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है अर्थात् बसन्त ऋतु के नये अनाजों से किया हुआ यज्ञ, परन्तु होली होलक का अपभ्रंश है।

This festival was formerly known as *Vasanta Nava Sasyeshti* that is- people performed yajnas, offering the new grains of the spring harvest as oblations. Holi is word derived from the word *Holaka*.

यथा–

तृणाग्निं भ्रष्टार्थ पक्वशमी धान्य होलक: (शब्द कल्पद्रुम कोष)

अर्धपक्वशमी धान्यैस्तृण भ्रष्टैश्च होलक: होलकोऽल्पानिलो मेद: *कफ दोष श्रमापह*। (भाव प्रकाश)

Trināgnim brashtartha pakvashamee dhanya holakah (Kalpadrum Dictionary)

Ardhapakvashamee dhanyaistrina brashtaishca holakah holakolpanilo medah kapha dosha shramāpah (BhāvaPrakāsh)

अर्थात् - तिनके की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमो-धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते हैं। यह होलक वात-पित्त-कफ तथा श्रम के दोषों का शमन करता है।

Holaka are legumes/pulses (grains growing in pods) roasted on fire fuelled by the straw left of the harvest. *Holaka* is an effective antidote (remedy) for health problems arising out of *vāta-pitta-cough* (air blockages, bile/acidity & phlegm).

होलिका - किसी भी अनाज के ऊपरी पर्त को होलिका कहते हैं-जैसे-चने का पट पर (पर्त) मटर का पट पर (पर्त), गेहूँ, जौ का गिद्दी से ऊपर वाला पर्त। इसी प्रकार चना, मटर, गेहूँ, जौ की गिदी को प्रह्लाद कहते हैं। होलिका को माता इसलिए कहते हैं कि वह चनादि का निर्माण करती (माता निर्माता भवति) यदि यह पर्त पर (होलिका) न हो तो चना, मटर रुपी प्रह्लाद का जन्म नहीं हो सकता। जब चना, मटर, गेहूँ व जौ भुनते हैं तो वह पट पर या गेहूँ, जौ की ऊपरी खोल पहले जलता है, इस प्रकार प्रह्लाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से जय घोष करते हैं कि होलिका माता की जय अर्थात् होलिका रुपी पट पर (पर्त) ने अपने को देकर प्रह्लाद (चना-मटर) को बचा लिया।

Holika: the pod husk or chaff of any grain (grams, peas, wheat, etc.) is called *Holika*.
Prahalād: The grains or pulses are called *Prahalād*.
Holika is referred as the mother of the grain. *Mātā nirmāta bhavati* defines the mother as the one who gives birth and nurtures the offspring. Without the pod (*Holika*) the gram, pea, wheat, etc. (*Prahalād*) would not have existed. The newly harvested grains are roasted on the fire. The husk or chaff burn out and the grains separated. The fragrance engenders happiness/satisfaction. Planters cheer up seeing the husk (*Holika*) sacrificing itself and saving the grains (*Prahalād*).

अधजले अन्न को होलक कहते हैं। इसी कारण इस पर्व का नाम होलिकोत्सव है और बसन्त ऋतुओं में नये अन्न से यज्ञ (येष्ट) करते हैं। इसलिए इस पर्व का नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है। यथा – वासन्तो = वसन्त ऋतु। नव = नये। येष्टि = यज्ञ। इसका दूसरा नाम नव सम्वतसर है। मानव सृष्टि के आदि से आर्यों की यह परम्परा रही है कि वह नवान्न को सर्वप्रथम अग्निदेव पितरों को समर्पित करते थे। तत्पश्चात् स्वयं भोग करते थे। हमारा कृषि वर्ग दो भागों में बँटा है - (1) वैशाखी, (2) कार्तिकी। इसी को क्रमश: वासन्ती और शारदीय एवं रबी और खरीफ की फसल कहते हैं। फाल्गुन पूर्णमासी वासन्ती फसल का आरम्भ है। अब तक चना, मटर, अरहर व जौ आदि अनेक नवान्न पक चुके होते हैं। अत: परम्परानुसार पितरों देवों को समर्पित करें, कैसे सम्भव है। तो कहा गया है–
अग्निवै देवानाम मुखं अर्थात् अग्नि देवों–पितरों का मुख है जो अन्नादि शाकल्यादि आग में डाला जायेगा। वह सूक्ष्म होकर पितरों देवों को प्राप्त होगा।

Holaka are semi-roasted grains. Hence the festival has been called Holi. The new grains of the spring harvest are offered as oblations in Yajna (*Yeshta*), thus the festival is also called *Vasanta Nava Sasyeshti*. (*Vasanta* –spring season; Nava – new; *Yeshti* –Yajna or sacrificial fire). It heralds the beginning of a new era (*Nava Samvatsar*). Aryans have always offered oblations of the first grains of new harvests during Yajnas, thereafter shared/consumed them as food.

Planters are classified into two categories: (i) *Baisakhee* and (ii) *Kartikee* respectively harvesting the Vasantee and *Sharadeeya* crops which are also known as *Rabi* and *Kharifa*. The Vasantee harvests starts on the full moon day of the month of *Phalguna*. The fresh crop of grams, peas, pigeon peas, barley, and others have reached maturity.

It has been a tradition to offer the new crop to the ancestors, but how? *Agnivai devānām mukham*, that is – fire renders the grains and other offerings into micro-particles spreading them into the atmosphere, thus travel far in the nooks and corners of the universe.

हमारे यहाँ आर्यों में चातुर्य्यमास यज्ञ की परम्परा है। वेदज्ञों ने चातुर्य्यमास यज्ञ को वर्ष में तीन समय निश्चित किये हैं- (1) आषाढ़ मास, (2) कार्तिक मास (दीपावली) (3) फाल्गुन मास (होली)
यथा

फाल्गुन्या पौर्णमास्यां चातुर्मास्यानि प्रयुञ्जीत मुखं वा एतत सम्वत् सरस्य यत् फाल्गुनी पौर्णमासी आषाढ़ी पौर्णमासी अर्थात्

फाल्गुनी पौर्णमासी, आषाढ़ी पौर्णमासी और कार्तिकी पौर्णमासी को जो यज्ञ किये जाते हैं वे चातुर्यमास कहे जाते हैं आग्रहाण या नव संस्येष्टि।

The Aryans have been observing the tradition of *chaturmāsa yajnas* (yajna performed at four-moth intervals). Knowledgeable people and Theologians had prescribed such yajnas to start at the month of (1) *Ashāda*, (2) *Kartika (Deepavali) and (3) Phalguna (Holi).*

Phalgunyā paurnamāsyām chaturmāsyāni prayunjeeta mukham samvatsarasya yat phalgunee paurnamāsee ashādee paurnamāsee, that is Yajna performed on the full moon day of the months of *Ashāda, Kartika and Phalguna* are called *chaturmāsa* or *āgrahana* or *nava sashyeshti*.

समीक्षा - आप प्रतिवर्ष होली जलाते हो। उसमें आखत डालते हो जो आखत हैं - वे अक्षत का अपभ्रंश रुप हैं, अक्षत चावलों को कहते हैं और अवधि भाषा में आखत को आहुति कहते हैं। कुछ भी हो चाहे आहुति हो, चाहे चावल हों, यह सब यज्ञ की प्रक्रिया है। आप जो परिक्रमा देते हैं यह भी यज्ञ की प्रक्रिया है। क्योंकि आहुति या परिक्रमा सब यज्ञ की प्रक्रिया है, सब यज्ञ में ही होती है। आपकी इस प्रक्रिया से सिद्ध हुआ कि यहाँ पर प्रतिवर्ष सामूहिक यज्ञ की परम्परा रही होगी इस प्रकार चारों वर्ण परस्पर मिलकर इस होली रुपी विशाल यज्ञ को सम्पन्न करते थे। आप जो गुलरियाँ बनाकर अपने-अपने घरों में होली से अग्नि लेकर उन्हें जलाते हो। यह प्रक्रिया छोटे-छोटे हवनों की है। सामूहिक बड़े यज्ञ से अग्नि ले जाकर अपने-अपने घरों में हवन करते थे। बाहरी वायु शुद्धि के लिए विशाल सामूहिक यज्ञ होते थे और घर की वायु शुद्धि के लिए छोटे-छोटे हवन करते थे दूसरा कारण यह भी था।

Every year we burn Holi, putting *ākhāta* –word derived from *akshata*. Rice is called *akshata* and in *Avadhi* language *ākhāta* refers to oblations to the fire (*āhuti*). All these refer to processes during Yajnas. *Āhuti* or *circumambulations* form part and parcel of yajnas. This practice establishes the fact the tradition of holding collective yajnas on annual basis existed and people from the four classes (*varnas*) joined hand to perform these large scale yajnas.

Those little effigies that we burn in our yards during Holi is similar to the small scale yajnas that we perform daily at home to purify the homely environment. Large scale or mega yajnas are held to benefit society at large, purifying the environment on a large scale basis.

ऋतु सन्धिषु रोगा जायन्ते—अर्थात् ऋतुओं के मिलने पर रोग उत्पन्न होते हैं, उनके निवारण के लिए यह यज्ञ किये जाते थे। यह होली हेमन्त और बसन्त ऋतु का योग है। रोग निवारण के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम साधन है। अब होली प्राचीनतम वैदिक परम्परा के आधार पर समझ गये होंगे कि होली नवान्न वर्ष का प्रतीक है।

Ritu sandhishu rogā jāyante means that the turning point from one season to another is conducive to the spread of diseases. Yajnas are held to ward off bacteria and viruses, thus an antidote to diseases. Holi marks the end of winter and heralds the spring season. Yajna is the best preventive measure to remain safe from infectious diseases at the turn of these two seasons. So anyone can safely conclude that Holi originated as an ancient Vedic tradition marking the beginning of a new era.

पौराणिक मत में कथा इस प्रकार है - होलिका हिरण्यकश्यपु नाम के राक्षस की बहिन थी। उसे यह वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी। हिरण्यकश्यपु का प्रह्लाद नाम का आस्तिक पुत्र विष्णु की पूजा करता था। वह उसको कहता था कि तू विष्णु को न पूजकर मेरी पूजा किया कर। जब वह नहीं माना तो हिरण्यकश्यपु ने होलिका को आदेश दिया कि वह प्रह्लाद को आग में लेकर बैठे। वह प्रह्लाद को आग में गोद में लेकर बैठ गई, होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गया। होलिका की स्मृति में होली का त्यौहार मनाया जाता है जो नितान्त मिथ्या है।

The orthodox belief is as follows: Holika was the sister of Hiranyakashyapu, a tyrant king. She had a boon that the fire could not harm her. Prahalād, the son of Hiranyakashyapu disobeyed his father's order: to worship him, not Lord Vishnu. Hiranyakashyapu ordered Holika to take Prahalād in her lap and sit on a pyre that was set alight. But, Holika was burnt and Prahalād unharmed. The festival is held to commemorate that event.

English translation by Acharya Bramdeo, GA, USA